Degree -1st. Paper-II

भारत में पश्चिमीकरण का प्रभाव :-

पश्चिमीकरण की प्रक्रिया से ब्राह्मण सबसे अधिक प्रभावित हुए। समाज में सर्वोच्च स्थिति में होने के कारण ब्राह्मण ब्रिटिश काल में पश्चिमी संस्कृति के बहुत निकट आ गये। उनके ब्राह्मणों ने अपने गाँवों को छोड़कर शहरों में अंग्रेजी शिक्षा ग्रहण करना आरम्भ कर दिया। इसके फलस्वरूप उन्होंने न केवल पाश्चात्य शिक्षा के माध्यम से पश्चिमी मूल्यों को आत्मसात किया बल्कि अपने धर्म की रूढ़ियों की भी आलोचना करना आरम्भ कर दी। स्वाभाविक था कि अन्य जातियों पर ब्राह्मणों का व्यापक प्रभाव होने के कारण, उन्होंने भी पश्चिम के इन नए मूल्यों को ग्रहण करना आरम्भ कर दिया।

अंग्रेजी शासन काल में भारतीय समाज

में बुनियादी परिवर्तन स्पष्ट होने लगे। यह काल भारतीय इतिहास के पिछले सभी युगों से इस अर्थ में भिन्न था कि ब्रिटिश शासक अपने साथ नई प्रौद्योगिकी, ज्ञान, विचारधारा और मूल्य लेकर यहाँ आये थे तथा संसार के नवीन साधनों के द्वारा उन्होंने सम्पूर्ण देश को एक राजनैतिक सूत्र में बांधने का प्रयास किया था। 19 वीं शताब्दी में भूमि-सुधारों, राजस्व-निर्धारण, अधिकारी तन्त्र, न्यायालयों की स्थापना तथा नवीन विधि संहिताओं के फलस्वरूप यहाँ की सम्पूर्ण परम्परागत व्यवस्था बदलने लगी। इस समय नवीन शिक्षा व्यवस्था की स्थापना तथा परिवहन के द्रुतगामी साधनों ने जीवन के प्रति नये दृष्टिकोण विकसित किये। अंग्रेजों द्वारा लगाये गये छापेखाने के फलस्वरूप पत्र-पत्रिकाओं एवं अन्य लिपिबद्ध साहित्य का तेजी से विकास हुआ जिसके फलस्वरूप देश के कोने-कोने में नवीन परिवर्तन जन्म लेने लगे। इस प्रकार अपने विविध रूपों में पश्चिमीकरण की प्रक्रिया ने भारतीय जीवन के महत्वपूर्ण पक्षों को प्रभावित किया। यह परिवर्तन भी गाँवों की अपेक्षा नगरीय जीवन में ही अनुभव किये गये। एक बार नगरों में जिस जीवन शैली को स्वीकार कर लिया जाता है, धीरे-धीरे उसका नगरीकरण की प्रक्रिया द्वारा गाँवों में भी प्रसार होने लगता है।